E Learning Study Material
By Prof YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
VKS UNIVERSITY ARA BIHAR

BA PART TWO ECONOMICS Hons
PAPER THIRD

Types of Farming - State Farming in India - 3. राजकीय कृषि -

इस प्रणाली में कृषि फार्मों पर राज्य का अधिकार होता है तथा वेतनभोगी कर्मचारियों द्वारा खेती कराई जाती है। राज्य कृषि अनुसंधान पर विशेष ज़ोर देता है तथा अधिक पूँजी लगा कर किसानों के सामने आधुनिक तथा वैज्ञानिक खेती का आदर्श प्रस्तुत किया जाता है। राजकीय कृषि फार्मों पर प्रति एकड़ उपज काफी अधिक होती है भारत में विभिन्न राज्यों में इस प्रकार के फार्म स्थापित किये गये हैं। राजकीय क्षेत्र के इन फार्मों की व्यवस्था के लिए भारत सरकार ने मई 1969 ई० में State Farms Corporation of India की स्थापना की जिसकी अधिकृत पूँजी 6 करोड़ रुपये है। लेकिन राजकीय कृषि की विस्तृत संभावना अभी भारत में नहीं है। इसका कारण यह है कि इस प्रणाली में सारी ज़मीन पर राज्य का अधिकार हो जाता है और फार्मों में सरकारी कर्मचारियों के अलावा सभी लोग मज़दूर के रूप में काम करते हैं इस प्रकार की व्यवस्था लाने के लिए देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता होगी। भारत में किसानों को अपनी ज़मीन से विशेष प्रेम है और वे इसे छोड़ना नहीं चाहते। देश में राजकीय फार्मों को चलाने के लिए कुशल कर्मचारियों का भी अभाव है और किसान

इन फार्मों पर उत्साह के साथ काम नहीं कर पायेंगे। इसके अलावे जनसंख्या की अधिकता, पूँजी की अपर्याप्तता पशु शक्ति के प्रयोग की अनिवार्यता किसानों का भूमि से विशेष लगाव आदि कारणों से भारत में राजकीय कृषि-व्यवस्था लागू करने का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है।

4 सामूहिक कृषि (Collective Farming) :-

सामूहिक कृषि के अन्तर्गत भूमि का ~~सामाजी~~ समाजीकरण कर दिया जाता है तथा भूमि पर से व्यक्तिगत या ~~नि~~ निजी स्वामित्व समाप्त हो जाता है। इस प्रकार भूमि पर किसानों का स्वामित्व न होकर समाज एवं राज्य का स्वामित्व होता है। सभी लोगों को मिलाकर एक कर दिया जाता है तथा पूँजी एवं पंतो आदि साधनों को एकत्रित कर वैज्ञानिक तरीके से बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। कृषि कार्य निर्वाचित समिति अथवा निगम की निगरानी में होता है। श्रमिको को अपनी आय का कुछ अंश राज्य को अंशदान के रूप में देना पड़ता है तथा शेष भाग का विभाजन उनके द्वारा किये गये श्रम के आधार पर होता है। कार्यकुशलता के लिए कुल लाभांश (Total Dividend) में से बोनस (Bonus) का वितरण किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि सामूहिक कृषि में खेती करनेवाले सभी लोग किसान नहीं बल्कि मजदूर होते हैं और उन्हें कहीं आवश्यकतानुसार तो कहीं उपार्जित वेतन के अनुसार मजदूरी दी जाती है। रूस तथा इजरायल में इसी प्रकार की व्यवस्था है। सामूहिक कृषि को क्रान्तिकारी प्रणाली अपनाने के लिए सामाजिक व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन अपेक्षित है।